दिनांक–10.02.2025

UG Thrid Semester MJC (Philosophy)

रामानुज द्वारा शंकर के मायावाद का खंडन

रामानुज ने शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को कई तर्कों के माध्यम से खंडित किया है–

1. **मायावाद की आलोचना** : रामानुज ने शंकराचार्य के मायावाद को अवास्तविक और भ्रामक माना है। उनके अनुसार, जगत ब्रह्म की अभिव्यक्ति है और इसलिए यह वास्तविक है। मायावाद जगत की वास्तविकता को नकारता है, जो ब्रह्म की सर्वशक्तिमानता के खिलाफ है।
2. **जीव और ब्रह्म का संबंध** : रामानुज ने अद्वैत वेदांत के उस दृष्टिकोण को अस्वीकार किया जिसमें जीव और ब्रह्म को एक ही माना गया है। उनके अनुसार, जीव और ब्रह्म अलग–अलग होते हुए भी एक–दूसरे से अभिन्न हैं। ब्रह्म जीवों का स्वामी है और जीव उसकी सेवा और भक्ति के लिए बने हैं।
3. **भक्ति का महत्त्व** : रामानुज ने भक्ति को मोक्ष का प्रमुख साधन माना है, जबकि शंकराचार्य का ज्ञान योग पर अधिक जोर था। रामानुज के अनुसार, भक्ति और उपासना के माध्यम से जीव ब्रह्म के साथ संबंध स्थापित कर सकता है और मोक्ष प्राप्त कर सकता है।
4. **ब्रह्म का सगुण स्वरूप** : रामानुज ने ब्रह्म के सगुण स्वरूप को महत्त्व दिया, जिसमें ब्रह्म को गुण, रूप और विशेषताओं के साथ माना गया है। शंकराचार्य का निराकार और निर्गुण ब्रह्म का सिद्धांत रामानुज के अनुसार, भक्तों के लिए उपासना और प्रेम का आधार नहीं बन सकता।

इन तर्कों के माध्यम से रामानुज ने शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को खारिज किया और अपने विशिष्टाद्वैत वेदांत को स्थापित किया, जिसमें भक्ति, जीव–ब्रह्म संबंध और जगत की वास्तविकता को प्रमुख स्थान दिया गया।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com